National Journal of Advanced Research
Online ISSN: 2455-216X, Impact Factor: RJIF 3.42
www.allnationaljournal.com
Volume 2; Issue 1; January 2016; Page No. 11-13

हिन्दी प्रदेश के लोक काव्य का विस्तार

डॉ. जयराम त्रिपाठी

सहायक प्रोफेसर, भारत रत्न, बाबा साहब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फतेहपुर

सारांश
हिन्दी प्रदेश के लोककाव्य के मुख्य क्षेत्र हिमांचल प्रदेश, पूर्वी पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश हैं। इन प्रदेशों में विभिन्न क्षेत्रीय भाषायें एवं बोलियाँ प्रचलित हैं। हिन्दी प्रदेश के लोक काव्य का क्षेत्र अन्य भाषाओं की अपेक्षा अधिक विस्तृत है। हिन्दी की ग्रामीण बोलियों के अन्तर्गत डा0 धीरेन्द्र वर्मा में पांच उपभाषाएं : पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, बिहारी, राजस्थानी पहाड़ी तथा उसकी बोलियों को लिया है। तात्पर्य यह है कि जिस–जिस भाषा क्षेत्र ने हिन्दी को राजकीय भाषा स्वीकार किया है उसकी बोलियाँ भी हिन्दी के अन्तर्गत मान ली गई है।

मूल शब्दः हिन्दी, भोजपुरी, मैथिली भाषा एवं राजस्थानी

प्रस्तावना

पूर्वी हिन्दी और पश्चिमी हिन्दी मे मौलिक अन्तर है; फिर भी समझने में कठिनाई नहीं होती। भोजपुरी बोली अब तो भाषा का रूप धारण कर रही है जिसे अन्य बोली क्षेत्र वाले बड़ी सरलता से समझ लेते है। मौथिली को भी समझना कठिन नहीं है। हिन्दी लोक काव्य साहित्य निम्न लिखित समुदायों में विभाजित किया गया है।

1. मगधी समुदाय – मागधी समुदाय के अन्तर्गत मैथिली, बज्जिका, मगही के रूप में सुदृढ़ करने का प्रयत्न किया जा रहा है।
2. अवधी समुदाय – अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी बोलियाँ को बोला जाता है।
3. ब्रज समुदाय – ब्रज समुदाय की बुंदेली, ब्रज और कनउजी बोलियाँ हैं।
4. राजस्थानी समुदाय – राजस्थानी बुंदेली, में राजस्थानी, मालवी बोलियों को बोला जाता है।
5. कौरवी समुदाय – कौरवी समुदाय में कौरवी बोली का प्रचलन है। इसे खाड़ी बोली भी कहा जाता है।
6. जंजाबी समुदाय – जंजाबी समुदाय में पंजाबी, डोगरी और काँगड़ी बोलियां आती है। अब ये बोलियां स्वतन्त्र भाषायें बन चुकी हैं।
7. पहाड़ी समुदाय – पहाड़ी समुदाय के अंतर्गत गढ़वाली, कुमाऊँनी, कुलुई और चंबियाली बोलिंया प्रचलित है। इसके अन्तर्गत नेपाली बोली भी आती है नेपाली भाषा अलग है जो नेपाल में बोली जाती है तथा गोखाली भाषा पहाड़ी क्षेत्रो में प्रचलित है जिसे हिन्दी से अलग रखा गया है।

उपर्युक्त समुदायों के आधार पर हिन्दी प्रदेश के लोककाव्य का क्षेत्र विस्तार किया जा सकता है।

मैथिली भाषा का लोककाव्य क्षेत्र : बिहार राज्य में मिथिला क्षेत्र है जहाँ के निवासी मैथिली भाषा बोलतें है जो हिन्दी भाषा के अन्तर्गत है। इस मिथिला क्षेत्र में प्राचीनकाल में मिथि नामक एक राजा था उसने अनेक यज्ञ करवाये थे। उसके नाम से मिथिला प्रदेश पड़ा था। याज्ञवलक्य स्मृति तथा रामायण में मिथिला नाम का उल्लेख है। डॉ0 जयकांत मिश्र के अनुसार मिथिला की प्राचीन सीमा के अंतर्गत आधुनिक मुजफ्फरपुर, दरभंगा, चंपारन, उत्तरी मुंगेट, उत्तरी भागलपुर, पूर्णिया, जिले के कुछ भाग तथा नेपाल राज्य के रीताहट, सरलाही, मोहतरी तथा मोरंग आदि जिले अंतर्युक्त हो सके है। विद्यापति ने कीर्तिलता के प्रारम्भ में मैथिल क्षेत्र की भाषा को अवहट्ट (देसिल बअना–सब जान मिट्ठा) कहा है। मैथिली की पश्चिमी, पूर्वी, उत्तरी तथा दक्षिणी सीमाओं पर क्रमशः भोजपुरी बंगला, नेपाली तथा मगही भाषायें स्थित हैं।

भोजपुरी भाषा का लोककाव्य क्षेत्र : बिहार के शाहाबाद जिले में भोजपुरी गॉव के नाम से भोजपुरी भाषा का नाम पड़ा, अतएव भोजपुरी भाषा बोलने वालों को भोजपुरिया भी कहा जाता है। मनोरंजन प्रसाद में इसका विस्तार उत्तर–प्रदेश तथा बिहार के चौदह जिलों में बतलाया है।

> आरे आवाड छपरा आवड, बलिया, मोतीहार आवड।
> रॉची अउर पलामू आवाड, गोरखपुर देवरिया आवड।
> गाजीपुर, आजमगढ़ आवड़, बस्ती अउरी जौनपुरी आवड।
> मिर्जापुर, बनारस आवड, सोना के कटोरी में।
> दूध भात ले ले आवड, बबुआ के मुँह में घुटुक।

अतः अत्तर पद्रेश में मिर्जापुर, बनारस, आजमगढ़, गाजीपुर, बलिया, जौनपुर, गोरखपुर, देवरिया और बस्ती जनपदों के निवासी भोजपुरी बोलते हैं। बिहार में आरा, छपरा, चंपारन, पलामू और राँची जनपदों के निवासी भोजपुरी भाषी हैं। बहराइच तथा गोंडा जिलों में निवास करने वाली थारू नाम जाति के लोग भोजपुरी की उप बोली थरूई बोलते हैं नैनीताल जिले के रूदपुर नामक स्थान के आस–पास भोजपुरी भाषियों के अनेक गॉव बस गये है। बिहार की भाषाओं में भोजपुरी भाषा सर्वप्रथम है। मैथिली और मगही भाषाएँ इसकी छोटी बहने हैं। भोजपुरी पश्चिमी मागध समुदाय में रखना उचित है। मैथिली तथा मगही केन्द्रीय मागध समुदाय के अन्तर्गत आती हैं। भोजपुरी भाषा का क्षेत्र अधिक विस्तृत है।

अवधी भाषा का लोककाव्य क्षेत्र

अवधी भाषा सरल होने के कारण उत्तर प्रदेश के कई क्षेत्रों में प्रचलित है। गोस्वामी तुलसीदास ने हिन्दुओं का धार्मिक ग्रन्थ भी रामचरित मानस अवधी भाषा में लिखा। वे अवधी एवं ब्रज दोनों भाषाओं में रचना करते थे। अवधी उस क्षेत्र की भाषा है जो कौसल के नाम से बाल्मीकि के शब्दो में मुदित स्फीत महान जनपद था।

बाल्मीकि रामायण के कारण कौसल और उसकी राजस्थानी अयोध्या युगों से भारत में प्रसिद्ध है। अवधी क्षेत्र के पश्चिमी में बुंदेली, कनउजी भाषी हैं दक्षिण में बुंदेली व बघेली भाषाएँ प्रचलित हैं पूर्व में भोजपुरी भाषा का प्रचलन है और उत्तर में हिमांचल के पर्वतीय क्षेत्रों में नेपाली भाषा को बोला जाता है। खेरीगढ़, लखीमपुर, नानपारा, बलरामपुर, जौनपुर, बांसी, बहराइच, गोंडा, बिसंवा, सीतापुर, रायबेरली, पुरवा, लखनऊ, कानपुर हरदोई, घाटमपुर, उन्नाव और संडीला क्षेत्रों में अवधी भाषा का विस्तृत क्षेत्र है। इसका क्षेत्रफल सादे पैतीस जहार वर्ग मील माना गया है।

कनउजी भाषा का लोक काव्य क्षेत्र

इस भाषा को कन्नौजी, कनौजी, कन्नौजी और कनउजिया नामों से जाना जाता है। कनउजिया शब्द अधिक उचित है। कन्नौज नगर को आज कनउज भी कहा जाता है। इस नगर के नाम पर ही कनउजी भाषा नाम पड़ा। यह अपने विशुद्ध रूप में कनउजी फरूखाबाद, शाहजहांपुर और इटावा जिलों तथा पश्चिमी कानपुर और पश्चिमी हरदोई के कुछ भागों मे बोली जाती है। कनउँजी भाषा के उत्तर में कुमाउँनी बोली जाती है तथा नेपाली भाषा की सीमा तक इसका, प्रचलन है। दक्षिण में बुंदेली भाषा का प्रचलन है। पूर्व में अवधी का क्षेत्र है और पश्चिम ब्रज भाषा का अधिपत्य है। अवधी, कुमाउँनी, ब्रज और बुंदेली भाषाओं से कनउजी भाषा घिरी हुई है अतः इस पर उनका प्रभाव है। उत्तर में नानकमता, खतिमा, पीली–भीत, पूरनपुर और मैलानी क्षेत्रों में इसका प्रचलन है। मध्य भाग में तिलहर, शाहजहांपुर, जलालाबाद, पाली और फरूखाबाद क्षेत्र आते है। दक्षिण की तरफ कानपुर, इटावा औरैया और डेरापुर क्षे आते हैं। पूर्व की और हरदोई के कुद भाग सम्मिलित हैं। कानपुर के पूर्वी भाग में कनउँजी भाषां पर अवधी भाषा का प्रभाव है और दशिणी भाग में बुंदेली का प्रभाव पड़ता है।

ब्रजभाषा का लोककाव्य क्षेत्र

कनउजी भाषा के पश्चिम में बुंदेली भाषा के उत्तर में कुनउँनी भाषा के दक्षिण में कौरवी भाषा के पूर्व में और राजस्थानी भाषा के पूर्व में ब्रज भाषा के क्षेत्र है। बुंदेली एवं कनउजी भाषाओं इसकी सहादराएँ है। ब्रज का विकास उत्तर वैदिक शूरसेन पंचाल की पाली, शोरसेनी प्राकृत, शौरसेनी मे उसका महत्व बढ़ा। ब्रजभाषा का लोक साहित्य अत्याधिक सुदृढ़ है। महाकवि सूरदास तथा महाकवयित्री मीरा बाई ने ब्रज भाषा में श्रीकृष्ण की भक्ति में काव्य की गंगा यमुना धारा बहाई थी। ब्रजभाषा के मुख्य क्षेत्र उत्तर प्रदेश तथा राजस्थान में पड़ते हैं। उत्तर, प्रदेश में बरेली, रामपुर (आंशिक) मिलक–तहसील, शाहाबादटांडा मुरादाबाद, बदायूँ, बुलंदशहर, अनूपशहर तहसील, खुजा तहसील, अलीगढ़, एटा, मैनपुरी, आगरा मथुरा और राजस्थान में भारतपुर, धौलपुर तथा करोली क्षेत्र हैं।

राजस्थानी भाषा का लोक काव्य क्षेत्र

राजस्थानी भाषा की कई बोलियाँ है अतएव बोलियों की अधिकता के विषय में एक दोहा प्रचलित है –

बारह कोसाँ बोली पलटे, बनफल पलट पाकाँ।
तीसाँ छती साँ जोबन पलटे, लखण न पलटे लाखाँ।

डॉ0 मोतीलाल मेनारिया ने राजस्थानी की बोलियों और उनके क्षेत्र का विभाजन इस प्रकार किया है :–

1. मारवाड़ी – जौधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, मेवाड़, शोखापाटी, अजमेर, मेरवाड़ा, पालनपुर तथा किशनगढ का कुछ भाग।
2. ढूँढाड़ी – शेखावटी के अतिरिक्त पूरा जयपुर, किशनगढ़ तथा इंदौर अलवर का अधिकांश भाग, अजमेर, मेवाडा का उत्तर पूर्वी भाग।
3. मलवी – मालवा में।
4. मेवाती – अलवर, भारतपुर के उत्तर पश्चिमी भाग में।
5. बागड़ी – डूंगरपुर, बांसवाडा में जिसे बागड़ देश भी कहते हैं।

राजस्थानी भाषा क्षेत्र के पश्चिम में पाकिस्तान है। पूर्व में कौरवी एवं ब्रजभाषा क्षेत्र है। उत्तर में पंजाबी भाषा क्षेत्र है और दक्षिण मे गुजरात प्रांत है। राजस्थानी भाषा में मारवाड़ी बोली ने उच्च स्थान पाया है। मारवाडी बोली बोलने वाले देश के कई प्रांतों में व्यापार करते हैं। अतएव मारवाडी बोली का अत्यधिक विकास हुआ है।

छत्तीसगढ़ी भाषा का लोककाव्य क्षेत्र

छत्तीसगढ़ी भाषा मध्य प्रदेश के रायगढ़ बिलासपुर, सुरगुजा, रायपुर खांड, सोनहट, अंबिकापुर, जरापुर, बिनाइगढ़, गरियबंद, लौलाक, खैरागढ़, कांकर बसतर, सोनपुर, गुरिया, अगदलपुर और गरियबंद क्षेत्रों में बोली जाती है। किसी समय यहां 36 गढ़ थे। अतएव भाषा को छत्तीसगढ़ी कहा गया। आज का उपेक्षित छत्तीसगढ़ किसी समय संस्कृति और सभ्यता का पनपी। अरण्य में निवास करने वाली 45 से भी अधिक जातियों को आज भी इस प्रदेश से सुरक्षित रखा है।

काँगड़ी भाषा का लोककाव्य क्षेत्र

कागड़ी भाषा गठन की दृष्टि से हिन्दी से समानता नहीं रखती है। इसका गठन डोंगी भाषा तथा पंजाबी भाषा से मिलता है फिर भी इस भाषा में हिन्दी के तत्सम तथा तद्भव शब्दों को स्वतंत्रता से बोला जाता है। अतएव विज्ञानों ने कागड़ी भाषा को हिन्दी के घेरे में डाल लिया है। कांगडा क्षेत्र के उत्तर में चंबियाली भाषा क्षेत्र है। पश्चिमोत्तर में जम्मू क्षेत्र है जहां डोगरी भाषा को बोला जाता है। दक्षिण पश्चिम की ओर पंजाब है। पूर्व में कुलुई भाषा क्षेत्र है और पूर्व–दक्षिण में उ0प्र0 का क्षेत्र है।

चंबिलायली भाषा का लोक काव्य क्षेत्र

चंबिलायली भाषा उत्तर प्रदेश में तिब्बती और लाहुली, किराती पूर्व में कुलुई, दक्षिण में कांगडी और पश्चिम में डोंगरी से घिरी है। चंबा पूर्णरूपेण पर्वतीय क्षेत्र है। यहाँ के निवासी प्रकृति पूजक हैं। प्रकृति की सुरम्यता, स्वच्छता तथा विशुद्धता में निखर चंबा क्षेत्र मनो–आकर्षक है। इस क्षेत्र में व्यास उपत्यका, रावी उपत्याका (चंबा उपत्यका) तथा चनाब उपत्यका के भाग सम्मिलित है। चनाब उपत्यका में ही पाँगी और लाहल स्थित है। इस जिले में पाँच तहसीले हैं – चंबा, भारमौर, चुराह, भटियात और पाँगी। चंबियाली भाषा के अंतर्गत छह भाषाएं आती है। चुराही, पंगवाली, भाठियाली, भरमौरी या गदंदी और चंबियाली भाषाओं मे समानता मिलती है। चंबा लाहुली (किराती) बौली थोड़ा भिन्न है। इस समय चंबा में 1 उर्दू पूराने अदालती लोगों में 2 (हिन्दी) नारियों, नवयुवकों और पंडितो में, 3 (कश्मीर) कश्मीर से आये लोगो में और 4 (तिब्बती) चंबा लाहुल के मियार नाला के गांवो में रहमे वाली में बोली जाती है। सम्पूर्ण पर्वतीय कुमायूँ प्रदेश के भागों में कुमाऊँनी भाषा का प्रचलन है। कुमाऊँ के उत्तर में तिब्बती क्षेत्र है, पश्चिमोत्तर में गढवाली क्षेत्र, पश्चिम दक्षिण में कौरवी क्षेत्र दक्षिण में कनउजी क्षेत्र और पूर्व में नेपाल देश का नेपाली भाषा क्षेत्र है।

यद्यपि कुमाउनी भाषा अल्मोडा और नैनीताल के निवासियों की जनभाषा है, तथापित इन जिलों के बीच भी कई सधानों में ऐसी बोलियाँ है जिनकी भाषा को कुमाउॅनी नहीं कहा जा सकता। अल्मोड़ा के उत्तर में स्थित जोहार और दारभा परगनों (भोट) के निवासी भोटिया कहे जाते हैं। जोहार को छोड़कर बाकी भाग में बोली जाने वाली भाषा कुमाऊॅनी नहीं तिब्बती है। जिले के पूर्वी भाग के अस्कोट है। यहां के कुल स्थानों में किराती जाति के कुछ

राजी लोग रहते है। इनकी बोली कुमाऊॅनी नही, किराती है। इसी प्रकार नैनीताल जिले का वह भाग जिसे तराई भाबर कहते हैं कुमाउॅनी भाषा नहीं बोलता। कुमाउॅनी भाषा के अन्तर्गत निम्नलिखित बोलियां आती हैं –

1. अल्मोड़ा जिला की बोलियॉ – अल्मोड़िया बोली, काली कुमाउॅ की बोली, शीर की बोली, पाली पछाऊ की बोली, जोहार की बोली, दानपुर की बोली, अल्मोड़ा के शिल्पकारों की बोली।
2. नैनीताल जिला की बोली – भावर कुमाऊ की बोली, बोग्ता बोली, थारू बोली।
3. गौरखाली बोली, जोटियाली बोली, श्रीनगर की गढ़वाली बोली एवं लोहना गढवाल, परगना चॉदपुर की बोलियां से कुमाऊॅनी भाषा की समानता मिलती है। ये समस्त बोलियाँ एक ही वंश कुमाउॅनी भाषा से विकसित हुई है।

गढ़वाली भाषा का लोक काव्य क्षेत्र

गढ़वाली भाषा का समबन्ध कुमाउॅनी भषा से मिलता है। राजपूत राजाओं ने गढ़वाल का निर्माण किया था अतः गढ़वाली भाषा में पश्चिमी हिन्दी, पंजाबी और राजस्थानी भाषाओं का प्रभाव होना स्वाभाविक है। गढ़वाली भाषा का निर्माण आठ बोलियों – राठी, लोभिया, बंधानी, दसौलिया मॉझ कुमाइयॉ, श्रीनगरिया, सलानी और गंगवारिया से हुआ है। गढ़वाली गढ़वाली क्षेत्र की केन्द्रीय भाषा है। गढ़वाली प्रदेश 10145 वर्गमील क्षेत्र में विस्तृत है। गढ़वाली भाषा के उत्तर में तिब्बती क्षेत्र पश्चिमी में कनीरी एवं सिरमोर क्षेत्र, पश्चिम–दक्षिण में कोरवी क्षेत्र और पूर्व दक्षिण में कुमाउॅनी क्षेत्र आते है। इस सुन्दर, सजीव और सरल भूभाग का जिसे आज सामान्यताः गढ़वाल कहा जाता है, सहसों वर्षो का प्राचीन सार्थक नाम केदारखंड है। धार्मिक साधन का पुनीत क्षेत्र होने के कारण महाकवि कालिदास ने जिस हिमालय को देवात्मा कहा है, उसका यह प्रदेश एक प्रमुख अंग है। मध्यकाल में सामंती गढ़ो की अधिकता के कारण इसका नाम गढ़वाल पड़ा गया।

कुलुई भाषा का लोक काव्य क्षेत्र

कुलुई भाषा का क्षेत्रफल 1912 वर्गमील है। इसके उत्तर में तिब्बती क्षेत्र, पश्चिम में चंबियाली क्षेत्र पूर्व–दक्षिण में महासई पर्वतीय क्षेत्र और ठीक पश्चिम में कागड़ी भाषा क्षेत्र है। इस प्रदेश की यात्रा स्वेनचांड चीनी यात्री ने की थी। कुल्लू क्षेत्र के निवासियों की कुलिदांया, कुनिंदा कहा जाता है। यह क्षेत्र मुख्यता वन्यपूर्ण है, कृषि हेतु भूमि बहुत कम है। इस प्रकार हम देख सकते है कि हिन्दी प्रदेश के लोक काव्य का क्षेत्र विस्तार पूरे भारत में है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. महापंडित राहुल, सांकृत्यायन, हि0सा0 का वृहत इतिहास षोडश भाग–1 मैथिली लोक साहित्य अवतरिका
2. महापंडित राहुल, सांकृत्यायन, हि0सा0 का वृहत इतिहास षोडश भोजपुरी अध्याय–1
3. महापंडित राहुल, सांस्कृत्यायन, हि0सा0 का वृहत इतिहास षोडश भाग खंड–2, भोजपुरी अध्याय–2
4. महापंडित राहुल, सांस्कृत्यायन, हि0 सा0 का वृहत इतिहास षोडश भाग–1, खंड–4, राजस्थनी अध्याय–3